नारायण मूर्ति की सादगी और सिद्धांत का हर कोई कायल

कानपुर। इंफोसिस कंपनी के सर्वेसर्वा की सादगी और सिद्धांत का हर कोई कायल है। उनकी यही अदाएं तो न जाने कितनों के लिए प्रेरणा श्रोत बन चुकी हैं। आईआईटी में एमटेक करने के दौरान उनके द्वारा बिताए गए तकरीबन ढाई साल भले ही बीता जमाना हो चुका हो पर अब भी कुछ लोग हैं जिन्हें एनआर नारायण मूर्ति का व्यक्तित्व अपनी ओर न खींचता हो। उनके अभिन्न कहे जाने वाले डॉ पंकज जलोटे और उनकी पत्नी शिखा एम. जलोटे तो उनकी तारीफ करते नहीं अघाते हैं। पच्चीस साल में पूरी दुनिया में मुकम्मल स्थान हासिल करने वाले इस शख्स ने साठ साल की आयु पूरी होते ही अपनी कंपनी के दूसरे कर्मचारियों की तरह सेवानिवृत्ति लेकर एक नई मिसाल पेश की है। जिसकी चर्चा सोमवार को दिन भर आईआईटी के प्रवक्ताओं और कर्मचारियों में रही।

शख्सियत

- **अब तक करोड़ों रुपए दे चुके हैं संस्थान को**
- **पढ़ाई के दौरान भी छात्र उनसे थे प्रभावित**

कंप्यूटर साइंस के डॉ पंकज जलोटे और लाइब्रेरी साइंस में कार्यरत उनकी पत्नी शिखा एम. जलोटे से नारायण मूर्ति की करीबी है। तकरीबन तीन साल पहले जब नारायण मूर्ति आईआईटी में आए थे तो उन्होंने वीआईपी व्यवस्था को ठुकराते हुए पंकज जलोटे के घर ही रुके थे। मीडिया कार्य देख रहे रवि शुक्ला के अनुसार स्वयं डॉ जलोटे ने कई बार बताया कि किस तरह से नारायण मूर्ति आज भी सादगी भरा जीवन जी रहे हैं। दो सौ वर्ग गज में बना उनका घर अब भी उन्हें उतना ही प्रिय है जितना तब, जब वह संघर्ष कर रहे थे।

इसके अलावा उनके घर में ऐसा कोई तामझाम मौजूद नहीं जिसे देखकर इस बात का कयास लगाया जा सके कि यह दुनिया की एक बहुत बड़ी साफ्टेवयर कंपनी के सर्वेसर्वा का घर है। आईआईटी से सेवानिवृत्त उदय नारायण अग्निहोत्री बताते हैं कि नारायणमूर्ति हॉस्टल नंबर चार में रहते थे। 1967 से 69 तक उन्होंने यहां रहकर एमटेक की पढ़ाई पूरी की। उनके व्यवहार और तौर तरीके से हर कोई इतना प्रभावित था कि उनकी बातें सिद्दत से सुनी जाती थीं। यहां से वह आईआईएम अहमदाबाद में कंप्यूटर सेंटर के ऑपरेशनल मैनेजर हो गए। एक साल बाद पुणे चले गए।

वहां कुछ दिन तक सॉफ्टवेयर की कंपनी पीएटएनआई में काम किया। वह अपने परिवार के साथ जिस फ्लैट में रहते थे वहीं से कंपनी की शुरुआत अपने योग्य मित्रों के साथ की। नारायणमूर्ति आईआईटी कानपुर को बहुत प्रेम करते हैं। उन्होंने अब तक आईआईटी को तकरीबन 26 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की है। **ब्यूरो**